आपातकाल में सृजन फुलवारी

सुरेश नायक 'ॐ'

अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सुरेश नायक "ॐ"

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
वारासिवनी, मध्यप्रदेश

978-93-5372-174-9

संपादक- **डॉ.** प्रीति समकित सुराना

तकनीकी संपादक एवं आवरण चित्र - संदीप कुमार सोनी, वारासिवनी

मुख्य कार्यालय - 15 नेहरू चौक, वारासिवनी, जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331

दूरभाष- (कार्या.) 07633-253159

मोबाईल- 9424765259

ईमेल- antrashabdshakti@gmail.com

वेबसाईट- www.antrashabdshakti

प्रथम संस्करण - 2020, सुरेश नायक "ॐ"

मूल्य - 50.00 रूपये

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

THE BOOK WRITTEN BY SURESH NAYAK OM

वैधानिक चेतावनीः- इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है। लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम में अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुनरूत्पादित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा-शब्दशक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई है। अतः प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु लेखक जिम्मेदार है। प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र, भाषाशैली एवं स्थान सभी लेखक की कल्पना है। किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

आपातकाल में सृजन फुलवारी

सादर नमन,

आज देश जिस भयावह स्थिति से गुज़र रहा है उस स्थिति में देश का हर एक व्यक्ति या ये कहें कि विश्व का प्रत्येक मानव आर्थिक, मानसिक और शारीरिक रुप से व्यथित है। कोरोना (covid19) जैसी महामारी ने पूरे विश्व को नैराश्य के दौर में लाकर खड़ा कर दिया है।

ऐसे समय में जब हमें अनुशासित रहना है, सामाजिक दूरी बनाकर सीमित संसाधनों में जीना है, एकदम से अपनी दिनचर्या को बदलकर एकाकी जीवन यापन का अभ्यास करना है और मन में महामारी की दशहत से होने वाली नकारात्मकता और निराशा को भी नियंत्रित करना है तब सबसे सही हल होता है खुद को रचनात्मकता से जोड़ लेना। जो व्यक्ति जिस कला से जुड़ा हो उसे मनः स्थिति के अनुरुप उसी कला में सृजनात्मक हो जाना चाहिए।

बस इसी विचार ने एक दिन प्रेरित किया कि अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन से जुड़े रचनाकारों को एक सृजनात्मक सरप्राइज़ दिया जाए।

अन्तरा शब्दशक्ति और जीवन के सहभागी प्रिय 'समकित सुराना' से परामर्श किया तो उन्होंने भी सहर्ष हामी भर दी। मेरे संपादन के साथ तकनीकी संपादन की सारी जिम्मेदारी हमारे तकनीकि संपादक प्रिय 'संदीप सोनी' ने ले ली और इक्यावन दिन के लॉकडाउन में एक साथ 111 किताबों का निःशुल्क ईसंस्करण तैयार किया जिसका मुद्रित संस्करण देश के परिस्थितियाँ सामान्य होते ही रचनाकारों की इच्छानुसार सशुल्क किया जा सकेगा।

अन्तरा शब्दशक्ति संस्था के सभी सदस्यों ने सृजन को हमेशा प्रेरित किया है जिसके लिए मैं सभी की हृदय से आभारी हूँ।

आपातकाल में कुछ न करने की सज़ा को कुछ करके खत्म करने में सहयोगी बने समकित, संदीप-टीना सोनी, बच्चों और पूरे परिवार की आभारी हूँ जिन्होंने हर पल मुझे मजबूत बनाए रखा।

आशा है ये सरप्राइज़ सभी रचनाकारों को उत्साहित करेगा और पाठकों को हमारा यह प्रयास पसंद आएगा। हमें प्रतिक्रियाओं की प्रतीक्षा रहेगी।

सादर आभार

संस्थापक एवं संपादक
अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं पंजीकृत संस्था
डॉ प्रीति समकित सुराना

अनुक्रमणिका

1.	आभार कोरोना योद्धा	6
2.	आनंद बन बहो	7
3.	जीवन दर्शन	8
4.	कृषक गाथा	9
5.	एक दीप, राष्ट्र के नाम	10
6.	अंजाम	11
7.	आजकल	12
8.	वक्त बदलेगा	13
9.	मन की समझ	14
10.	उर्मिला	15
11.	जनता कफ़र्यू	16
12.	बचाव ही उपाय	17
13.	रात की दीवार	18
14.	शिखर	19
15.	बाबा अम्बेडकर	20
16.	स्त्री	21

आभार कोरोना योद्धा

कट जाएगा हर संकट।
छँट ही जाएगी हर पीर।।
धैर्य और मनोबल रखना।
डटे रहना बनकर वीर।।

पुलिस हमारी है रक्षक।
कर्त्तव्य निभाती दिन-रात।।
इनका स्वागत सम्मान करो
मानो-जानो इनकी बात।।

उतरे बनकर मानो देवदूत।
प्राण रक्षक हैं चिकित्सक।।
बीमारी, महामारी में हैं सहारे।
सेवा में तजें, निज सुख तक।।

देहरी न लाँघो बेमतलब ही
घर पर रह सहयोग करो।।
भूखे को भोजन भी बाँटो।
खुद का भी सदुपयोग करो।।

सब मिलकर जीतेंगे युद्ध।
हौसला हमारा है नायाब।
है एकता, निष्ठा, अनुशासन।
तय है, हम होंगे कामयाब।।

आनंद बन बहो

किस ध्यान में डूबे रहते हो।
धारा से चुप चुप बहते हो।।

कुछ शोर करो बचपन वाला
क्यों सन्नाटा तुमने पाला है।
भरो कुलांचें पग पग कूदो।
मन तो तेरा बचपन वाला है।
जीर्ण दीवार से क्यों ढहते हो--
किस ध्यान.....!

तानो तानें, आलाप भरो।
मन में तन में, सरगम हो।
बुत बन के ना यूँ बैठ रहो
हर्ष और हँसी का संगम हो।
जो जीवन को आनंद कहते हो--
किस ध्यान.....!

सुख -दुःख मन के भाव हैं।
इच्छाओं को करो नियंत्रित,
बाँधो, आनंद तट पर नाव।
हर्ष को करो सदा आमंत्रित।
बेमतलब दुःख क्यों सहते हो--
किस ध्यान.....!

जीवन दर्शन

विकास का है मूल मंत्र।
शिक्षित हो हर इंसान।।
सभी बेड़ियाँ ध्वस्त हों,
यदि सभी बढ़ाएं ज्ञान।।

विवेकानंद, पाणिनि, चरक,
आर्यभट्ट थे बड़े विद्वान।।
भारत को जिनने जग में,
दिया विश्वगुरु का स्थान।।

बाँटे से नित नित बढ़ती है,
जिसका नहीं कोई उपमान।
स्वर्ण,अन्न,भूमि आभूषण,
सबसे बड़ा विद्या का दान।।

जन्मभूमि को हैं समर्पित,
सब सुख तज,वीर जवान।
निज दायित्व निभाएँ हम।
जग में बढ़े राष्ट्र का मान।।

नारी है जननी,देवी,शक्ति,
नारी से है जग का उत्थान।
भेदभाव और पशुता तज,
सदा करो, नारी सम्मान।।

कृषक गाथा

दमक दमक दमकी है दामिनी।
गड़-गड़, गड़गड़ाते है बादल।।
धरतीपुत्र भयाक्रांत सिर थामे,
मन में प्रभु प्रार्थना, नेत्रों में जल।।

ना जाने विधि ने क्या ठानी है।
मेहनत होना मेरी क्या पानी है।।
फसलें सब लह-लह यौवना हैं।
उदराग्नि भी सबकी बुझानी है।।
अभावग्रस्त न हो जाये मेरा कल..
दमक दमक.....!

बेटी का विवाह बहुत निकट है।
ऋण चुकाने की तिथि निकट है,
टूटा छप्पर माँगे मरम्मत अपनी,
पिंडदान को जाना गंगा तट है।।
उत्तरदायित्व निभाने मन विकल
दमक दमक.....!

जाओ जाओ कारे कारे बदरा।
उसे ना मारो,जो पहले से मरा।।
वर्षा ऋतु में आना स्वागत होगा,
आना जब सूखें धरा के अधरा।।
अभी न बहाओ,धरा का काजल..
दमक दमक.....!

एक दीप, राष्ट्र के नाम

वसुधा धरेगी गगन रूप,
निशा में दीप बनेंगे तारे।
आयुध होगी आत्मशक्ति,
एकता दमकेगी द्वारे द्वारे।।

समर शांति का सब लड़ें साथ,
विपदा का विप्लव हो अनाथ।।
अनेकता में एकता हो साकार,
प्रार्थना के लिए उठेगा हर हाथ।।
सब मिल कर छांटेंगे अंधियारे---

अँधियारे के आँगन में जाकर।
द्वार द्वार पे एक दीप जलाकर।।
युद्धनाद है ये,चक्रव्यूह तोड़ेंगे।
जीतेंगे,संयम,साहस दिखाकर।।
दिनकर दूत बन भर देंगे उजियारे,..!

अंजाम

खो रहे सब अर्थ...!
सार्थक शब्दों के।।
रिश्तों के धागे में...!
पड़ रहीं हैं गाँठें।।
मौन है कौरव सभा,
मानवता का हो रहा
बेधड़क चीरहरण..।

विषधर हो रहें हैं..!
अपनत्व के भक्त।।
भूल रही वेग नदी।
अपनी मर्यादाएँ..।
वासना लाँघ रही है
रिश्तों की सीमाएं।।

मोबाइल, माशूका..।
मनमर्जी, मद्यपान।
युवाओं की बन कर
रह गई है पहचान।।

बात इतनी सी है-
संस्कृति शर्मसार है।
युवा भूला संस्कार है।।
शीर्ष पर अहंकार है।
कटु शब्दों की बहार है
स्वार्थ बेलगाम है....!
ये उसी का अंजाम है..।।

आजकल

आजकल घर, अपनों से है भरा हुआ।
रिश्तों का सूखता पौधा फिर हरा हुआ।।

आज़ाद हो गए हैं मन के भाव खुलकर।
बाहर दुनिया का, क्या जरा पहरा हुआ।।

थम जायें उसके पैर, जिसने मेरे पैर थामे।
सोचता है हर आदमी घर में ठहरा हुआ।।

चीखें, आहें, कराहें दब गईं विलासी शोर में
खुद के ही शोर में, ये ज़माना बहरा हुआ।।

अपनी ही ताक़त को पहचानो "ॐ" तुम।
जगाओ, साहस तुम में बहुत है भरा हुआ।।

वक़्त बदलेगा

सुख में भी कभी प्रभु का नाम लो।
दुख दस्तक दे तो सब्र से काम लो।।

बात हो अगर फूलों को बचाने की,
शूलों की मौत का, सर इल्ज़ाम लो।।

तुम्हें नवाजा है, गर काबिलियत से।
किसी जरूरतमंद का हाथ थाम लो।।

मैंने तो सौंप दी हैं तुम्हे अपनी सांसें
तुम भी कभी मेरे नाम एक शाम दो।।

मानेंगे प्यार की शाला का शागिर्द हो
पहले मेरे नाम, प्यार का पैगाम दो।।

इससे पहले सूरज तपकर झुलसाए।
किसी घने दरख़्त की छांव थाम लो।।

सब्र है तो छलका न करो हर बात पे"ॐ"
वक़्त बदलेगा, अभी सब्र से काम लो।।

मन की समझ

मन में एक उत्साह रहे।
तो दिल भी बादशाह रहे।

जो बुझे मन ले जलते रहे।
वो हमेशा ही गुमराह रहे।।

जो खुद खुशबू सा बिखरे।
लोग उसको ही सराह रहे।।

उसका ठेंगा बिगाड़ेगा जमाना
जो सदा खुदा की पनाह रहे।।

जो औरों को गड्डे खोदते रहे।
खुदा गवाह है वो तबाह रहे।।

बस एक तमन्ना लिए बैठा हूँ।
हर दिल में प्यार की चाह रहे।।

ये मन से मन की समझ है "ॐ"
जिसे हम और तुम निबाह रहे।।

उर्मिला

तिल-तिल कर जलती बाती सी।
प्रिय के द्वारा बिन पढ़ी पाती सी।।

मन में उमड़े, अमुखरित भाव सी।
वो, मंदिर में बिन गूँजी प्रभाती सी।।

वचन निभाने अश्रुजल भी साधा।
कोमलांगी, निभा गई कुल मर्यादा।।

विरह वेदना की थी वो मूर्ति साकार।
उर्मिला के जीवन में कैसी ये बाधा।।

प्रिय, तुम्हें वन, मुझे विरह वन मिला।
त्याग से तपता, कैसा जीवन मिला।।

जी रही प्रिय के आगमन की आस में
बस प्रिय के दर्श हेतु जीवित उर्मिला।।

जनता कर्फ़्यू

जनता कर्फ़्यू,आत्मानुशासन।
सहज उपाय, स्वस्थ जन-जन।

कोरोना के विरूद्ध,करो स्वयुद्ध,
बार-बार हाथ धोकर,करो शुद्ध।

करबद्ध नमस्कार,सिद्ध चमत्कार,
सर्व सिद्ध, श्रेष्ठ, आहार शाकाहार।।

बनो तुम सजग, ना फिरो राह-राह,
घर रहो, अपनों के साथ, है सलाह।।

स्वास्थ हित, देशहित, है जिम्मेदार,
आपकी सतर्कता, और व्यवहार।।

मौलिक कर्तव्य सा सब निभाएं हम,
कोरोना से देश को मिल बचाएं हम।।

बचाव ही उपाय

हाथ धोना, करना अभिवादन।
स्पर्श तज, दूर से करना नमन।।
घर पर ही रहें, परिजनों के साथ
जनता कफ़र्यू करते हुए पालन।।

बरतें सावधानी, छोड़ें मनमानी।
कोरोना को बाहर न दें निमंत्रण।
निजहित में ही छिपा है देशहित।
आपका सहयोग, बीमारी शमन।

सुरक्षा,सावधानी, जिम्मेदारी है।
दृढ़ रहो है अभी विपरीत पवन।
हमें सच्चे देशभक्त भारत सपूत।
दिखा दें, अपनी एकता है गहन।।

रात की दीवार

रात की दीवार
पर टंगे है, कुछ स्वप्न
अधखुली आँखों के।।
और बने है, कुछ
शैलचित्र से, अन्नविहीन
कुड़कुड़ाती आँतों के।।

रात की दीवार पर
कुछ फटे कम्बल
झांकते जिनमें कुछ
बिवाई फटे पैर।
रात की दीवार पर
ठण्ड दे रही गश्त
भूखी छिपकली
सी फिर रही है।
स्वर सुन रही
कड़कड़ाते दाँतों के।।

चाँद आ डटा है,
रोशनी के साथ।।
सूर्य, ऊष्मा और
पोषण की आशा ले
डटो रहो सब
रात की दीवार पर।।

शिखर

तुंग, श्रृंग धवल शिखर बनो, रहो सदा अटल।
काल हो भले विपरीत तो, रहो नहीं विकल।।

तजो नहीं वसुंधरा बनो भले ही हिमशिखर।
देह हो वज्र सम, मगर हृदय रखो मृदु कमल।

बन प्रहरी डटो वहीं, भुजदंड को कर कृपाण
रोक दो अरि चाल समीर भी ना पाये निकल

शिखर बनो कर्म से, तुम कर्म के बनो शिखर
जगा के सारी शक्तियाँ, रोक दो उथल पुथल।।

"ॐ"है महामंत्र, आत्मशक्ति को करो प्रबल।
हो शुद्ध भाव, शिखर की सीढ़ी है, आत्मबल।।

बाबा अम्बेडकर

चल पड़ा था, बटोही अकेला राह पर।
नवल इतिहास रचने का, स्वप्न लेकर।।

हथियार बनाया, पुस्तकें और ज्ञान को।
हृदय में भरा था, आत्मविश्वास अमर।।

शत्रु थीं रूढ़ियाँ, पाखंड, ग़रीबी समाज।
पीना पड़ा उसे, अस्पृश्यता का ज़हर।।

झुका नहीं, रुका नहीं, थका नहीं कभी।
भीमराव बना महान, बाबा अम्बेडकर।।

पा गया ज्ञान का गगन, वो महामानव।
भारत को दिया, वृहद संविधान रचकर।।

ऋणी देश आपका, लोकतंत्र गणराज्य।
है नमन वन्दन तुम्हें, बाबा अम्बेडकर।।

स्त्री

स्त्री सदा नियत धर्म है, लयबद्ध कर्म है।
जिस हृदय ममत्व नहीं, उसे स्त्री मर्म है।।

पाषाण बनती है, कभी अग्नि में तपती है।
प्रिय के प्राण पाने, यमराज से लड़ती है।।

मरती है रोज जीकर, मौन है पीड़ा पीकर।
प्रेम साकार करती है, सृष्टि का सृजन कर।।

सदियों से संघर्षरत है, निज स्थान पाने को।
स्त्री,आतुर बस बूंद से सिंधु में समाने को।।

देवदासी बनी, कभी दरबार में सजाई गई।
सभा में चीरहरण हुआ, दाँव पर लगाई गई।।

बात आई स्वाभिमान की तो तलवार हुई।
अत्याचार मिटाने को, रणचंडी अवतार हुई।।

स्त्री है ममता, त्याग, तपस्या प्रेम और मर्यादा।
स्त्री चाहे थोड़ा सा मान, न माँगे कुछ ज्यादा।।

- सुरेश नायक "'ॐ"

हिन्द व हिन्दी का सम्मान
है प्रमाण देशभक्ति का
आइए करें
सृजन शब्द से शक्ति का

रचनाकार

सुरेश नायक 'ॐ'

आईडिया टावर के पास,
डी.डी.कॉलोनी, बेगमगंज
जिला-रायसेन (म.प्र.)
Email- sureshnayakkrishna@gmail.com
Mobile - 9893940323

विश्व पर आए कोरोना रुपी संकट के कारण आपातकाल की स्थिति बनी। वैसे तो आपातकाल ने भारत के जन मन के पैर थाम दिए, थोड़ी असुविधाओं का सामना भी सबको करना पड़ा। लेकिन इस आपातकाल का एक उजला पक्ष भी है। इसने सबको अपना उच्च कोटि का समय उपलब्ध कराया। अपनों के साथ रहने का अवसर दिया।

सबसे अच्छा अवसर तो सृजनकार के लिए रहा, सृजन के लिए भरपूर समय मिला। मैं बहुत ही सम्माननीय एवं गौरवशाली मंच 'अंतरा शब्दशक्ति' का आत्मीय आभार व्यक्त करता हूँ। जिसने हमारे सृजन को सदैव प्रेरित भी किया और हमारी लिखी रचनाओं को अपनी पत्रिका में स्थान देकर साकार रूप प्रदान किया।

पहली बार अपनी कविता पत्रिका में छपने का जो आनंद है, वह मुझ जैसे नये कवि से अच्छा कौन जान सकता है। आपका प्रोत्साहन सृजन की नई ऊर्जा भर देता है। सच कहूँ तो अंतरा शब्दशक्ति पर ही मैंने कविता लिखना सीखा।

अंतरा शब्दशक्ति का बहुत आभार, बहुत धन्यवाद।

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)
अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com
15, नेहरु चौक, मेन रोड वारासिवनी, जिला- बालाघाट (म.प्र.), पिन 481331
संपर्क- 9424765259, अणुडाकः antrashabdshakti@gmail.com
978-93-5372-174-9
मूल्य 50/-

अन्तरा शब्दशक्ति के लिंक्स
Website:- www.antrashabdshakti.com
Facebook page:- https://www.facebook.com/antrashabdshakti/
Fecbook group:- https://www.facebook.com/groups/antraashabdshakti/